नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 06.10.2019

प्रकाशनार्थ

(राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह को कुलपति प्रो. वी. के. सिंह ने सम्बोधित किया)

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125 वीं जयन्ती वर्ष एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित एवं भूगोल विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय **राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह** की अध्यक्षता करते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के **कुलपति प्रो. वी. के. सिंह** ने कहा कि पदार्थ और ऊर्जा से बनी इस सृष्टि में ऊर्जा के बिना जीवन असम्भव है। ऊर्जा सृष्टि का एक ऐसा महत्वपूर्ण घटक है जिसके बिना इस जीव–जगत की कल्पना ही नहीं की जा सकती। **ऊर्जा आधारित इस सृष्टि में ऊर्जा का रूपान्तरण ही मानव की खोज है।** ऊर्जा के रूपान्तरण की तकनीकों को पर्यावरण को प्रभावित किये बिना उपयोग एवं उत्पादन के सन्तुलन को साधना होगा। नित–नूतन तकनीकों एवं प्रौद्योगिकी का विकास करते आज के विज्ञान के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती जीवन के अनुरुप सृष्टि को बिना छेड़े, पर्यावरण को बिना दूषित किये ऊर्जा की आपूर्ति करना। मस्तिष्क की ऊर्जा को हमें ऐसी दिशा देनी चाहिए जो मानव कल्याण एवं प्रकृति संरक्षण पर जोर दे। भारत सहित एशिया एवं विश्व के पास ऊर्जा के असीमित भण्डार हैं, हमें अनुपयोगी ऊर्जा को उपयोगी ऊर्जा में रूपान्तरण का विज्ञान पैदा करते रहना होगा। ऊर्जा उत्पादन के साधन ऊर्जा संरक्षण एवं ऊर्जा का अपव्यय रोकना हमारे लिए महत्वपूर्ण अवसर है। दुनिया के सौर्य ऊर्जा के उपयोग का मार्गदर्शन भारत के प्रधानमंत्री मा. नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्त्व में प्रारम्भ हो चुका है। हम सौर्य ऊर्जा के उपयोग की दिशा में आगे बढ़े। विश्वविद्यालय ने एक मेगावाट बिजली सौर्य ऊर्जा से उत्पन्न कर रहा है।

प्रो. वी. के. सिंह ने समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए आगे कहा कि मानवीय सभ्यता के विकास के साथ ऊर्जा का उपयोग भी बढ़ा है अग्नि, ऊर्जा का बड़ा स्रोत है। प्रकृति में ऊर्जा के अनन्त स्रोत विद्यमान है उन्हीं प्रकृति संसाधनों के आधार पर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों की खोज की प्रवृत्ति मानव समाज में बढ़ी है। भारतीय परिक्षेत्र अपनी भौगोलिक विशेषताओं के कारण प्रकृति संसाधनों सम्पन्न है परन्तु जनसंख्या विस्फोट के कारण ऊर्जा संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। इस चुनौती पूर्ण समय में ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का व्यवहारिक ज्ञान और नीतिगत उपयोग करना महत्वपूर्ण है। भारत में युवाओं में इलेक्ट्रानिक वस्तुओं को आवश्यकता से अधिक प्रयोग भी न केवल स्वास्थ के लिए हानिकारक है बल्कि ऊर्जा क्षय का बड़ा कारण है। हमें न केवल ऊर्जा उत्पादन ध्यान देना होगा वरन् उसके संयमित उपभोग पर विशेष रूप से सर्तक रहना होगा। बढ़ते जन दबाव के कारण भूमिगत जल निरंतर नीचे जा रहा है नदियों का मार्ग परिवर्तित हो रहा है जल स्तर कम हो रहा है तापवृद्धि के कारण ग्लेश्यिर पिघल रहा है जैसे अनेक कारणों से ऊर्जा संकट एवं

पर्यावरणीय प्रदुषण में वैश्विक रूप ले लिया है। सृष्टि की संरक्षा और ऊर्जा संकट से बचाव के लिए हमें ईको फ्रेण्डली बनना ही होगा।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रतिष्ठित भूगोल विद्व **प्रो. बी. के. श्रीवास्तव** ने कहा कि ऊर्जा की आवश्यकता सभी को होती है। पृथ्वी पर कोई ऐसा जीवन नहीं है जिसे ऊर्जा की आवश्यकता नही है परन्तु ऊर्जा का नैतिक उपयोग नही किया जा रहा है। ऊर्जा का व्यवहारिक और नीतिगत उपयोग होना चाहिए। बढ़ती आबादी और हमारी जीवन शैली में आये बदलाव के कारण ऊर्जा की माँग बढी है जिसके कारण परम्परागत ऊर्जा पर अत्यधिक दबाव बढ़ा है। ऊर्जा उत्पादन का वह मार्ग खोजना होगा जो सृष्टि के सृजनात्मक स्वरूप में संरक्षित रखे तथा प्रकृति–पुरुष (जीव) के सम्बन्धों अर्थात सन्तुलन को न बिगाड़े। इस दिशा के सौर्य ऊर्जा एक बेहतर विकल्प है। सूर्य से प्राप्त सौर्य ऊर्जा शक्ति अपार है एवं यह अक्षय है सौर्य ऊर्जा पृथ्वी की सम्पूर्ण जीवन प्रक्रियाओं को संभालती है और यही हर उस ऊर्जा रूप का आधार होती है जिसका हम प्रयोग करते है। सौर्य ऊर्जा का प्रत्यक्ष उपयोग संग्रह करके इसके गर्म करने विधुत उत्पन्न किया जा सकता है। प्रत्यक्ष सौर्य ऊर्जा का प्रयोग सोलर सेल द्वारा ताप, प्रकाश एवं विधुत के रूप में हो सकता है।

समारोप कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व प्रतिकुलपति **प्रो. एस. के दीक्षित** ने व्याख्यान देते हुए कहा कि भारत एक अनूठा देश है जहां पर भौगोलिक तत्वों की विषमता पायी जाती है परन्तु इन्ही भौगोलिक विषमताओं में ऊर्जा के वैकल्पित नवीनीकरण स्त्रोतो का भरमार है उन्होंने ऊर्जा संकट के बारे में कहा कि संकट ऊर्जा पर नही बल्कि संकट मानवतता पर यानि जनसंख्या (वृद्धि)। उन्होंने कहा कि हर राष्ट अपनी संसाधन सम्पन्नता से प्रभावित होता है राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रीय संसाधनो को केन्द्रित होना चाहिए। संसाधनों के प्रति हमारा विचार मानवीय व्यवहारिक होना चाहिए। संसाधनों का उपयोग व्यवहारिक और नीतिगत होनी चाहिए। जनसंख्या और संसाधन में संतुलन स्थित होनी चाहिए हमें अनुकूलतम जनसंख्या के सिद्धान्त को अपनाना चाहिए। प्रो. दीक्षित जी ने पांच शक्ति तत्वों की प्रकृति की व्याख्या करते हुए कहा कि भूमि जो शिव शक्ति, आकाश जो विष्णु शक्ति, वायु जो सूर्य शक्ति, अग्नि दुर्गा शक्ति, जल गणेश शक्ति है इसलिए हमें इन प्राकृतिक तत्वों के रूप में घूमना चाहिए और समस्त शक्तियों का देव रूप में संरक्षण होगा तो कभी भी ऊर्जा संकट का सामना नही करना पड़ेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने सभी शोध पत्रों की समीक्षा की और शोध छात्रों को शुभकामना दी।

विशिष्ट अतिथि प्रो. एस. एन. पाण्डेय टीम. एम. भागलपुर, विश्वविद्यालय, बिहार ने समापन समारोप में बोलते हुए कहा कि भारत में पारिस्थितिकी ऊर्जा की वर्तमान दशा एवं प्राकृतिक संसाधनो के व्यापक क्षय पर्यावरण में निरन्तर हो रहे परिवर्तन के लिए हो रहे औद्योगीकरण एवं नगरीकरण ही जिम्मेदार है। पर्यावरण सन्तुलन एवं सरंक्षण के लिए ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना चाहिए। बड़े पैमाने पर ऊर्जा का उपयोग करने वाले उद्योगों में ऊर्जा कटौती की मितव्ययिता को वैज्ञानिक बनाना होगा।

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

भारत में बाजार आधारित संरचना के साथ अधिक ऊर्जा के बचत के लिए एक ढांचा तैयार करना चाहिए। घरेलू एवं खाद्य ऊर्जा अनिवार्य आश्रीत ऊर्जा डीजल, पेट्रोल आदि पर निर्भरता कम करनी होगी, इसके लिए वायोडीजल एथेनाल आदि विकल्प तलाशने होंगे। ऊर्जा संकट का प्रभाव अधिकाशतः प्रभाव विकासशील देशो पर पड़ा है क्योंकि इनकी सबसे अधिक खपत है खासकर जो राज्य नगरीकरण और औद्योगीकरण दृष्टि से अग्रणी दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, चण्डीगढ़ आदि है यहा पर जैविक ऊर्जा को बढ़ावा देकर ऊर्जा संकट को कम किया जा सकता है।

विशिष्ट अतिथि ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के पूर्व अध्यक्ष **प्रो. नन्देश्वर शर्मा** ने कहा कि हम ऊर्जा का सद्पयोग कम करते है जिसके कारण ज्यादा मात्रा में ऊर्जा व्यर्थ हो जाती है। ऊर्जा के समुचित प्रबन्धन को सुनिश्चित करने की महती आवश्यकता है। प्राचीन काल से लेकर अधुनातन काल तक ऊर्जा की चर्चा और उसकी शक्ति से हम सभी समय–समय पर अवगत होते रहे है अग्नि और लोहे के अविष्कार ने जिस स्वरूप से हमारा परिचय कराया वह अद्वितीय है भारत का भौगोलिक परिवेश वैविध्य के साथ–साथ ऊर्जा के विभिन्न स्वरूपों को अपने में समेटे हुए है इलेक्ट्रानिक संसाधनो के अंधाधुंध प्रयोग ने ई–कचेरे की बड़ी समस्या खड़ी की है उसके समुचित निस्तारण एवं रिसाईकिल की सुदृढ़ व्यवस्था की आवश्यकता है।

समापन समारोह में अतिथियों का स्वागत एवं आभार प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने तथा संचालन डॉ. प्रज्ञेश मिश्र ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रवज्जलन एवं पुष्पांजलि एवं सरस्वती वन्दना के साथ प्रारम्भ होकर कुलगीत, एकल गीत एवं वन्देमातरम् के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रो. जे. एन. पाण्डेय, डॉ. केशव सिंह, डॉ. यू. पी. सिंह, डॉ. बी. एन सिंह, डॉ. शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ. निलाम्बुज सिंह सहित प्रतिभागी एवं शिक्षक विद्यार्थी उ पस्थित रहे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी